अध्याय 12: घर की याद

विषय-सूची

5 प्रश्नावली · 17 प्रश्न

प्रश्नावली 12.1	मेरे उत्तर मेरे तर्क	8 प्रश्न
प्रश्नावली 12.2	मेरी समझ मेरे विचार	5 प्रश्न
प्रश्नावली 12.3	कविता का सौंदर्य	1 प्रश्न
प्रश्नावली 12.4	कविता की संरचना	1 प्रश्न
प्रश्नावली 12.5	व्याकरण की बात	2 प्रश्न

प्रश्नावली 12.1 — मेरे उत्तर मेरे तर्क

प्रश्न 1

भवानीप्रसाद मिश्र ने यह कविता कहाँ और क्यों लिखी? (क) विदेश से मित्र के लिए (ख) युद्धभूमि से जनता के लिए (ग) जेल से परिवार के लिए (घ) यात्रा से किसी संबंधी के लिए

हल

कवि भवानीप्रसाद मिश्र ने 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में सक्रिय भाग लिया था।
ब्रिटिश सरकार ने उन्हें तीन वर्ष के कारावास का दंड दिया।
जेल में रहते हुए ही उन्होंने 'घर की याद' कविता लिखी, जिसमें परिवार की स्मृति केंद्रीय संवेदना है।
विकल्प (ग) सही है: जेल से परिवार के लिए।

उत्तर: (ग) जेल से परिवार के लिए

प्रश्न 2

लगातार बरसता पानी कवि के मन की किस भावना का परिचायक है? (क) उत्साह और आवेग (ख) भय और क्रोध (ग) साहस और उमंग (घ) चिंता और बेचैनी

हल

कविता में बार-बार 'बहुत पानी गिर रहा है' की पुनरावृत्ति से स्पष्ट होता है कि वर्षा कवि की मनःस्थिति का प्रतीक है।
कवि जेल में बंद है, घर दूर है, परिजनों की याद सता रही है — इसी कारण 'काँपते हैं प्राण थर-थर' की पंक्ति में बेचैनी व्यक्त होती है।
लगातार गिरता पानी उसकी चिंता और बेचैनी को बढ़ाता है।
विकल्प (घ) सही है: चिंता और बेचैनी।

उत्तर: (घ) चिंता और बेचैनी

प्रश्न 3

कविता में माँ की कैसी छवि उभरती है? (क) कमजोर और निष्क्रिय (ख) स्नेहमयी और दृढ़ (ग) शिक्षित और अनुशासनप्रिय (घ) सरल और उदासीन

हल

कविता में माँ को 'बिन-पढ़ी' कहा गया है, किंतु वे 'दुख में गढ़ी' हैं — अर्थात् कठिनाइयों में ढली-निखरी हैं।
'माँ कि जिसकी गोद में सिर, रख लिया तो दुख नहीं फिर' — इन पंक्तियों में माँ का अगाध स्नेह प्रकट होता है।
माँ की स्नेह-धारा का 'यहाँ तक भी पसारा' है — यह उनकी भावनात्मक दृढ़ता को दर्शाता है।
विकल्प (ख) सही है: स्नेहमयी और दृढ़।

उत्तर: (ख) स्नेहमयी और दृढ़

प्रश्न 4

"वज्र-भुज नवनीत-सा उर" पंक्ति के माध्यम से पिता के व्यक्तित्व की कैसी छवि प्रस्तुत की गई है? (क) कर्मठ और सृजनशील (ख) साहसी और पराक्रमी (ग) दृढ़ और संवेदनशील (घ) प्रसन्नचित्त और सक्रिय

हल

'वज्र-भुज' का अर्थ है वज्र जैसी कठोर भुजाएँ — यह शारीरिक शक्ति और दृढ़ता का प्रतीक है।
'नवनीत-सा उर' का अर्थ है ताजे मक्खन जैसा कोमल हृदय — यह संवेदनशीलता का प्रतीक है।
इस प्रकार पिताजी का व्यक्तित्व दोनों गुणों का संगम है — बाहर से कठोर, भीतर से कोमल।
विकल्प (ग) सही है: दृढ़ और संवेदनशील।

उत्तर: (ग) दृढ़ और संवेदनशील

प्रश्न 5

"एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए" पंक्ति किस ओर संकेत करती है? (क) पिता की कठोरता (ख) पिता की भावुकता (ग) वर्षा की तीव्रता (घ) पिता की निर्बलता

हल

यह पंक्ति पिता के बड़ जैसे विशाल व्यक्तित्व के संदर्भ में आई है।
पिता बाहर से दृढ़ हैं, पर एक छोटी-सी बात (एक पत्ता टूट जाए) भी उनके आँसुओं की धारा बहा सकती है।
यह उनकी अत्यधिक भावुकता को दर्शाता है।
विकल्प (ख) सही है: पिता की भावुकता।

उत्तर: (ख) पिता की भावुकता

प्रश्न 6

"बहिन आई बाप के घर, हाय रे परिताप के घर" पंक्ति में 'परिताप' शब्द से क्या संकेत मिलता है? (क) घर का समृद्ध होना (ख) घर की सजावट (ग) घर में दुख का वातावरण (घ) घर की शांति

हल

'परिताप' का अर्थ है अत्यधिक दुख, शोक।

कवि के जेल में होने के कारण परिवार दुखी है। बहिन मायके (बाप के घर) आई है, लेकिन भाई (कवि) वहाँ नहीं है — इसलिए घर में दुख का वातावरण है।

'हाय रे परिताप के घर' — यह कवि की पीड़ा व्यक्त करता है कि उसकी अनुपस्थिति में घर में शोक छाया है।

विकल्प (ग) सही है: घर में दुख का वातावरण।

उत्तर: (ग) घर में दुख का वातावरण

प्रश्न 7

"और कहना मस्त हूँ मैं" पंक्ति में कवि का ऐसा कहना किस बात की ओर संकेत करता है? (क) कवि अपने जीवन में बहुत खुश है। (ख) अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है। (ग) घर के लोगों के प्रति उदासीन है। (घ) कवि प्राकृतिक सौंदर्य से अभिभूत है।

हल

कवि सावन के बादल को दूत बनाकर परिजनों को संदेश भेजता है।

वह बादल से कहता है: 'उन्हें कहना लिख रहा हूँ, उन्हें कहना पढ़ रहा हूँ, काम करता हूँ कि कहना, नाम करता हूँ कि कहना' — ये सब झूठी सांत्वना है।

'और कहना मस्त हूँ मैं' — यह कथन उसके वास्तविक दुख को छिपाने का प्रयास है, ताकि परिजन चिंतित न हों।

विकल्प (ख) सही है: अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है।

उत्तर: (ख) अपने दुख को परिजनों से छिपाना चाहता है

प्रश्न 8

इस कविता में किस बात को प्रमुखता से वर्णित किया गया है? (क) घर की शांति और सुरक्षा (ख) घर के सदस्यों के बीच का संबंध (ग) घर के निर्माण की प्रक्रिया (घ) घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा

हल

कविता का शीर्षक ही 'घर की याद' है।

कवि जेल में है, सावन की रात घर याद आ रहा है — माँ, पिताजी, चार भाई, चार बहिनें, भौजी, सरला — सभी की स्मृतियाँ हैं।

यह पूरी कविता कवि की घर से दूरी और उस दूरी की पीड़ा को व्यक्त करती है।

विकल्प (घ) सही है: घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा।

उत्तर: (घ) घर की याद और अकेलेपन की पीड़ा

प्रश्नावली 12.2 — मेरी समझ मेरे विचार

प्रश्न 1

कविता में वर्णित पिता के व्यक्तित्व की उन विशेषताओं का वर्णन कीजिए जिनसे उनका बहुआयामी रूप सामने आता है।

हल

कविता में पिताजी का बहुआयामी व्यक्तित्व इन रूपों में चित्रित है:

1. शारीरिक शक्ति और दृढ़ता: 'वज्र-भुज' — भुजाएँ वज्र जैसी कठोर हैं। वे अभी भी दौड़ सकते हैं, खिलखिला सकते हैं।
2. साहस: 'मौत के आगे न हिचकें, शेर के आगे न बिचकें' — वे निर्भीक हैं।
3. भावुकता: 'एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए' — भीतर से अत्यंत कोमल और संवेदनशील हैं।
4. स्नेह: 'नवनीत-सा उर' — हृदय ताजे मक्खन जैसा कोमल है।
5. ऊर्जा और उत्साह: 'आज गीता-पाठ करके, दंड दो सौ साठ करके, खूब मुगदर हिला लेकर' — वे बुढ़ापे में भी सक्रिय हैं।

इस प्रकार पिताजी का व्यक्तित्व बाहर से वज्र (कठोर, साहसी) और भीतर से नवनीत (कोमल, भावुक) है।

उत्तर: पिताजी का व्यक्तित्व वज्र-भुज और नवनीत-सा उर का संयोजन है — बाहर से दृढ़, साहसी, ऊर्जावान; भीतर से अत्यंत भावुक और स्नेही।

प्रश्न 2

"दुख डटकर ठेलता हूँ" यह कथन मनुष्य के संघर्षशील स्वभाव को उजागर करता है। कविता के आधार पर बताइए कि कठिन परिस्थितियों में कवि किस प्रकार धैर्य, साहस और त्याग का परिचय देता है?

हल

1. धैर्य: कवि जेल में होने पर भी आत्म-नियंत्रण बनाए रखता है। वह 'कह न देना मौन हूँ मैं, खुद न समझूँ कौन हूँ मैं' जैसी निराशा को परिजनों पर नहीं थोपता।
2. साहस: 'दुख डटकर ठेलता हूँ' — वह विपरीत परिस्थितियों में भी हार नहीं मानता।
3. त्याग: परिजनों को कष्ट न हो, इसलिए अपना दुख छिपाता है। बादल को संदेश देता है: 'उन्हें देते धीर रहना' — वह स्वयं कष्ट सहकर भी परिवार को सांत्वना देना चाहता है।
4. 'और कहना मस्त हूँ मैं' — जेल की कठोर परिस्थितियों में भी वह परिजनों को मस्त और प्रसन्न दिखाना चाहता है, यह स्वार्थहीन त्याग है।

उत्तर: कवि जेल में रहते हुए अपना दुख छिपाकर, धैर्य बनाए रखकर, परिवार को सांत्वना देकर संघर्षशीलता, धैर्य, साहस और त्याग का परिचय देता है।

प्रश्न 3

कविता में बार-बार वर्षा का वर्णन कवि के भावों को किस प्रकार व्यक्त करता है?

हल

कविता में वर्षा एक भावात्मक प्रतीक के रूप में प्रयुक्त है:

1. 'आज पानी गिर रहा है, बहुत पानी गिर रहा है' — वर्षा की निरंतरता कवि की अटूट घर-याद और बेचैनी को प्रकट करती है।
2. 'बहुत पानी गिर रहा है, घर नजर में तिर रहा है' — जैसे वर्षा में घर की छवि आँखों के सामने तैरने लगती है।
3. 'हाय, पानी गिर रहा है, घर नजर में तिर रहा है' — पिता के आँसू और वर्षा एकाकार हो जाते हैं।
4. 'काँपते हैं प्राण थर-थर' — वर्षा की ठंड और मन की घबराहट एक साथ व्यक्त होती है।
5. 'मन निहायत नम गया है' — वर्षा मन को भिगो देती है, अर्थात् उदासी और भावुकता बढ़ती है।

इस प्रकार वर्षा बाहरी प्रकृति और कवि के भीतरी मन का दर्पण बन जाती है।

उत्तर: वर्षा कविता में कवि की घर-याद, बेचैनी और भावुकता का प्रतीक है — बाहर पानी गिरता है, भीतर मन भीगता है।

प्रश्न 4

कविता से उन पंक्तियों को चुनकर लिखिए और भाव स्पष्ट कीजिए जिनसे माँ की भावनात्मक मजबूती का परिचय मिलता है।

हल

पंक्तियाँ और उनके भाव:

1. 'और माँ बिन-पढ़ी मेरी, दुख में वह गढ़ी मेरी' — माँ पढ़ी-लिखी नहीं हैं, पर दुखों की भट्टी में तपकर दृढ़ बनी हैं।
2. 'माँ कि जिसकी गोद में सिर, रख लिया तो दुख नहीं फिर' — माँ की गोद दुख की औषधि है; उनके पास सिर रखते ही पीड़ा दूर हो जाती है — यह उनकी भावनात्मक शक्ति है।
3. 'माँ कि जिसकी स्नेह-धारा का यहाँ तक भी पसारा' — माँ का स्नेह इतना विस्तृत और गहरा है कि जेल तक भी उसकी अनुभूति होती है।
4. 'और माँ ने कहा होगा... आँख में किसलिए पानी, वहाँ अच्छा है भवानी' — पुत्र के जेल जाने पर माँ स्वयं रोने के बजाय परिवार को सांत्वना देती हैं — यह उनकी भावनात्मक दृढ़ता का परिचय है।

उत्तर: माँ 'दुख में गढ़ी' हैं — स्नेहमयी और दृढ़, जिनका स्नेह जेल तक पहुँचता है और जो स्वयं दुखी होकर भी परिवार को ढाँढस देती हैं।

प्रश्न 5

कविता का कौन-सा अंश आपको सबसे अधिक भावनात्मक और प्रभावी लगता है और क्यों?

हल

कविता का निम्नलिखित अंश सबसे अधिक भावनात्मक है:

'पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा,
रो पड़े होंगे बराबर, पाँचवें का नाम लेकर।'

यह अंश इसलिए सर्वाधिक प्रभावी है:

1. पिताजी जो 'वज्र-भुज' हैं, जो मौत और शेर से नहीं डिगते — वे अपने पाँचवें बेटे (कवि) का नाम लेकर रो पड़ते हैं। यह विरोधाभास हृदयस्पर्शी है।
2. 'पाँचवाँ मैं हूँ अभागा' — कवि स्वयं को अभागा कहता है क्योंकि जिसे पिता 'सोने पर सुहागा' कहते थे, वही जेल में बंद है।
3. यह अंश पिता-पुत्र के प्रेम और कवि के अपराध-बोध को एक साथ प्रकट करता है।

उत्तर: पिताजी के रोने वाला अंश ('रो पड़े होंगे बराबर, पाँचवें का नाम लेकर') सर्वाधिक भावनात्मक है — वज्र जैसे कठोर पिता का आँसू बहाना कवि की पीड़ा और पिता-पुत्र के प्रेम को एक साथ व्यक्त करता है।

प्रश्नावली 12.3 — कविता का सौंदर्य

प्रश्न 1

कविता में निम्नलिखित विशेषताओं वाली पंक्तियाँ ढूँढकर लिखिए: • स्मृति और दृश्य बिंब • लोकभाषा की सहजता • पंक्तियों का दोहराव • आलंकारिक प्रयोग • प्राकृतिक दृश्यों और भावों का संयोजन • संबोधनात्मकता

हल

1. स्मृति और दृश्य बिंब:
'खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह, बड़े बाड़े में कि जाता, बीज लौकी का लगाता' — पिताजी की स्मृति में एक जीवंत दृश्य-बिंब।

2. लोकभाषा की सहजता:
'आज सबका मन चुआ होगा' — 'चुआ' बुंदेलखंडी/स्थानीय भाषा का शब्द है जिसका अर्थ है द्रवित/भावुक होना।
'मठू उनकी मिला लेकर' — 'मठू' (मुट्ठी) स्थानीय बोली का सहज प्रयोग।

3. पंक्तियों का दोहराव:
'बहुत पानी गिर रहा है' और 'हाय, पानी गिर रहा है' — यह पुनरावृत्ति कविता में एक संगीतात्मक लय और भावनात्मक आवेग उत्पन्न करती है।
'पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा' — दो बार आई पंक्ति।

4. आलंकारिक प्रयोग:
'वज्र-भुज नवनीत-सा उर' — उपमा अलंकार (भुजाएँ वज्र जैसी, हृदय नवनीत जैसा)।
'मन कि बड़ का झाड़ जैसे' — उपमा अलंकार (मन बरगद के पेड़ जैसा)।

5. प्राकृतिक दृश्यों और भावों का संयोजन:
'गिर रहा पानी झरा-झर, हिल रहे पत्ते हरा-हर, बह रही है हवा सर-सर, काँपते हैं प्राण थर-थर' — प्रकृति के दृश्य और मन के भाव एक साथ।

6. संबोधनात्मकता:
'हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन' — सावन को प्रत्यक्ष संबोधित किया गया है।

उत्तर: कविता में स्मृति-बिंब, लोकभाषा, पुनरावृत्ति, उपमा, प्रकृति-भाव संयोजन और संबोधन — सभी विशेषताएँ उपस्थित हैं जो कविता को जीवंत और प्रभावपूर्ण बनाती हैं।

प्रश्नावली 12.4 — कविता की संरचना

प्रश्न 1

कविता 'घर की याद' कवि के भीतर उठते भावों की यात्रा है। कविता में प्रकृति के माध्यम से व्यक्त इस यात्रा के प्रमुख चरणों का वर्णन करें। (संकेत – पानी का गिरना, सबेरा होना)

हल

कविता में भावों की यात्रा निम्नलिखित चरणों में होती है:

चरण 1 — रात और वर्षा (पहली बेचैनी):
'आज पानी गिर रहा है, बहुत पानी गिर रहा है, रात-भर गिरता रहा है, प्राण मन घिरता रहा है' — रात भर वर्षा होती है, कवि का मन घिरा हुआ है।

चरण 2 — सबेरा (पर राहत नहीं):
'अब सबेरा हो गया है, कब सबेरा हो गया है, ठीक से मैंने न जाना' — सवेरा हुआ पर बादलों की अँधेरी अभी भी है; मन में वही छाप है।

चरण 3 — परिवार की स्मृति:
पानी देखकर घर याद आता है — चार भाई, चार बहिनें, माँ, पिताजी — सभी एक-एक कर स्मृति में आते हैं।

चरण 4 — पिताजी का भावुक रूप:
वर्षा का दृश्य पिताजी की स्मृति जगाता है — उनका बाड़े में घूमना, बीज लगाना, और 'पाँचवें का नाम लेकर' रो पड़ना।

चरण 5 — बादल को संदेश:
कवि सावन को दूत बनाकर संदेश भेजता है: परिजनों को धीर देना, उन्हें बताना कि वह मस्त है — दुख छिपाने का प्रयास।

चरण 6 — समापन (विरह और साहस):
'मैं मजे में हूँ सही है, घर नहीं हूँ बस यही है' — कवि की विरह-पीड़ा और साहस दोनों एक साथ प्रकट होते हैं।

उत्तर: कविता रात की वर्षा → सबेरे की बेचैनी → परिवार की स्मृतियाँ → पिताजी का भावुक रूप → बादल को संदेश → विरह के साथ साहस — इन चरणों में भावों की यात्रा है।

प्रश्नावली 12.5 — व्याकरण की बात

प्रश्न 1

कविता में स्थानीय/क्षेत्रीय भाषा के शब्दों का सहज प्रयोग हुआ है। कविता से नीचे दी गई पंक्तियों में रेखांकित शब्दों का अर्थ स्पष्ट करते हुए उनसे नए वाक्य बनाइए: • एक छिन सौ बरस है रे • तुझे बतलाता कि बेला / ने फलानी फूल झेला • और भौजी और सरला, सहज पानी सहज तरला • मन कि बड़ का झाड़ जैसे

हल

(i) 'छिन' — अर्थ: क्षण, पल (स्थानीय/लोकबोली शब्द)।
नया वाक्य: उस मुश्किल घड़ी में एक-एक छिन पहाड़ जैसा लग रहा था।

(ii) 'बेला' — अर्थ: एक सुगंधित फूल (मोगरा); यहाँ पिताजी की स्मृति में वह फूल खिलने की बात है।
नया वाक्य: बगीचे में बेला के फूल खिले हुए हैं और उनकी महक चारों ओर फैल गई है।

(iii) 'तरला' — अर्थ: सहज, तरल स्वभाव वाली, सरल-चंचल।
नया वाक्य: उसका स्वभाव इतना तरला है कि वह सबसे आसानी से घुल-मिल जाती है।

(iv) 'बड़' — अर्थ: बरगद, वट वृक्ष।
नया वाक्य: गाँव की चौपाल पर एक पुराना बड़ का पेड़ आज भी खड़ा है।

उत्तर: छिन = क्षण/पल; बेला = मोगरे का फूल; तरला = सरल/तरल/चंचल; बड़ = बरगद वृक्ष।

प्रश्न 2

नीचे दी गई कविता की पंक्तियों में आए शब्दों की व्याकरणिक पहचान लिखिए: (क) "बहुत पानी गिर रहा है" — पानी, बहुत, गिर रहा है (उदाहरण दिया गया) (ख) "पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा" — बुढ़ापा, व्यापा, जिनको (ग) "खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह" — खुले, वह, बदन, फिरता (घ) "एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए" — एक, फूट जाए, पत्ता (ङ) "हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन" — सजीले, मेरे, सावन

हल

(क) उदाहरण (दिया गया): पानी = संज्ञा; बहुत = विशेषण; गिर रहा है = क्रिया।

(ख) 'पिताजी जिनको बुढ़ापा, एक क्षण भी नहीं व्यापा':
• 'बुढ़ापा' शब्द है — संज्ञा (भाववाचक संज्ञा)
• 'व्यापा' शब्द है — क्रिया (अकर्मक क्रिया, भूतकाल; 'बुढ़ापा' इसका कर्ता है, कोई कर्म नहीं)
• 'जिनको' शब्द है — सर्वनाम (संबंधवाचक सर्वनाम)

(ग) 'खुले सिर नंगे बदन वह, घूमता फिरता मगन वह':
• 'खुले' शब्द है — विशेषण ('सिर' की विशेषता)
• 'वह' शब्द है — सर्वनाम (पुरुषवाचक सर्वनाम)
• 'बदन' शब्द है — संज्ञा (जातिवाचक संज्ञा)
• 'फिरता' शब्द है — क्रिया (अकर्मक क्रिया, वर्तमानकालिक कृदंत)

(घ) 'एक पत्ता टूट जाए, बस कि धारा फूट जाए':
• 'एक' शब्द है — विशेषण (संख्यावाचक विशेषण)
• 'फूट जाए' है — क्रिया (अकर्मक क्रिया, संभावनार्थ)
• 'पत्ता' शब्द है — संज्ञा (जातिवाचक संज्ञा)

(ङ) 'हे सजीले हरे सावन, हे कि मेरे पुण्य पावन':
• 'सजीले' शब्द है — विशेषण (गुणवाचक विशेषण)
• 'मेरे' शब्द है — सर्वनाम (उत्तम पुरुष, संबंधकारक)
• 'सावन' शब्द है — संज्ञा (जातिवाचक/व्यक्तिवाचक संज्ञा)

उत्तर: व्याकरणिक पहचान: (ख) बुढ़ापा=भाववाचक संज्ञा, व्यापा=अकर्मक क्रिया (भूतकाल), जिनको=संबंधवाचक सर्वनाम; (ग) खुले=विशेषण, वह=सर्वनाम, बदन=संज्ञा, फिरता=क्रिया; (घ) एक=संख्यावाचक विशेषण, फूट जाए=क्रिया, पत्ता=संज्ञा; (ङ) सजीले=गुणवाचक विशेषण, मेरे=सर्वनाम, सावन=संज्ञा।